[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6925 **L**

Unique Paper Code : 2053100021

Name of the Paper : Bharat Bharti

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi - DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1) सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(कोई 3)** (12x3=36)

i. आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए,
जो बिक गये चाण्डाल के घर सत्य-रक्षण के लिए!
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थ-हित जानी जहाँ,
शिवि हरिश्चन्द्र, दधीचि-से होते रहे दानी यहाँ।।

ii. बस अब विदेशों से मँगाकर बेचते हैं माल वे,
मानो विदेशी वाणिजों के हैं यहाँ दल्लाल वे!
वेतन सदृश कुछ लाभ पर वे देश का धन खो रहे,
निर्द्रव्य कारीगर यहाँ के हैं उन्हीं को रो रहे ।

iii. हतभाग्य हिन्दू-जाति! तेरा पूर्व-दर्शन है कहाँ?
वह शील, शुद्धाचार, वैभव देख, अब क्या है यहाँ?
क्या जान पड़ती वह कथा अब स्वप्न की-सी है नहीं?
हम हों वहीं, पर पूर्व-दर्शन दृष्टि आते हैं कहीं?॥

iv. जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गये, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे !
कर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
हा दैव! क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

2) मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए। उनके साहित्यिक जीवन में *भारत-भारती* का क्या स्थान है? (18)

अथवा

भारत-भारती के अतीत-खंड का महत्त्व, उद्देश्य और आज के संदर्भ में प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

3) कवि ने भारत की तत्कालीन दुर्दशा के लिए किन कारणों को उत्तरदायी माना है? *भारत-भारती* के 'वर्तमान' खंड के आधार पर भारतीयों की सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक स्थिति का विश्लेषण कीजिए। (18)

अथवा

"वर्तमान-खंड एक दर्पण की तरह हैं जो समाज को उसका असली चेहरा दिखता है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4) भारत भारती के भविष्यत् खंड में कवि द्वारा प्रस्तुत भारत के भावी स्वरूप का विस्तृत विवेचन कीजिए। (18)

अथवा

भारत भारती के भविष्यत् खंड में सामाजिक सुधार संबंधी विचारों का विवेचन कीजिए।